आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 10 अंक : 8 अप्रेल, 2023 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

प्रदेश में पशुपालन व पशुचिकित्सा के विकास की अपार संभावनाएं

आप सभी को विश्व पशुचिकित्सा दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं। प्राचीन काल से ही मानव की समृद्धि कृषि व पशु सम्पदा से जुड़ी हुई है। भारत जैसे प्राचीन सभ्यता और संस्कृति वाले देश में पशु–पक्षियों को देवता तुल्य माना जाता है। पशुओं के प्रति प्यार, करूणा और दयाभाव प्रत्येक भारतवासी के मन–मस्तिष्क में है। पशुधन अर्थव्यवस्था के उत्थान में महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा पशुपालन ग्रामीण अंचल में कृषकों, पशुपालकों, भूमिहीन व्यक्तियों को स्थायी रोजगार प्रदान कर अच्छी गुणवत्ता वाले जीवन को सुनिश्चित करता है। आदिकाल से ही मनुष्य भोजन की पूर्ति हेतु पशुओं पर निर्भर रहा है। मनुष्यों के चिकित्सकों की भांति पशुओं की उचित चिकित्सा हेतु भी चिकित्सकों की आवश्यकता होती है। पशु स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के साथ–साथ पशुचिकित्सकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष अप्रेल के अन्तिम शनिवार को विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया जाता है। विश्व पशुचिकित्सा संघ ने वर्ष 2001 में हर साल अप्रेल माह में विश्व पशु चिकित्सा दिवस मनाने की घोषणा की थी। इस वर्ष भी 29 अप्रेल को विश्व पशुचिकित्सा दिवस मनाया जा रहा है जिसका प्रमुख उद्देश्य पशुचिकित्सा विज्ञान के महत्व को विश्व पटल पर लाना तथा पशु स्वास्थ्य व पशु कल्याण के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। वेटरनरी विश्वविद्यालय भी बेहतर पशुचिकित्सा व प्रसार सेवाएं देकर पशु कल्याण के प्रति संकल्पबद्ध है। विश्वविद्यालय के बीकानेर, नवानियां (उदयपुर) एवं जयपुर स्थित परिसरों में अत्याधुनिक तकनीक से युक्त पशु क्लीनिक और एम्बुलेटरी सेवाएं प्रदान की जा रही है तथा इनका सुदृढ़ीकरण भी किया जा रहा है। राजस्थान सरकार भी पशु स्वास्थ्य व पशु कल्याण के प्रति गम्भीर है। प्रदेश की अर्थव्यवस्था के साथ–साथ ग्रामीण परिवारों की आजीविका में भी पशुपालन के अत्यधिक महत्व हो देखते हुए माननीय मुख्यमंत्री महोदय की बजट घोषणा वर्ष 2023–24 में पशुपालन क्षेत्र को ओर अधिक सुदृढ़ बनाने तथा पशुपालन सम्बन्धी उच्च शिक्षा के ढांचे के सुदृढ़ीकरण के लिए दौसा, सीकर, बस्सी (जयपुर) व सिरोही में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय खोलने, जोजावर–पाली में नवीन पशु विज्ञान केन्द्र की स्थापना के साथ–साथ जोबनेर (जयपुर) में नवीन वेटरनरी विश्वविद्यालय खोले जाने की घोषणा की हैं जिससे पशुपालन क्षेत्र में किसानों एवं पशुपालकों को निश्चित रूप से लाभ मिलेगा। साथ ही माननीय मुख्यमंत्री महोदय ने प्रदेश के पशुचिकित्सा सुविधाओं के विस्तार हेतु कई जिलों में बहुउद्देश्य पशु चिकित्सालय व विभिन्न पशुचिकित्सा केन्द्र खोलने की घोषणा की है। लम्पी रोग के प्रकोप को कोविड़ की भांति ही आपदा घोषित कर पशुपालकों को सम्बल देने के लिए उनके दुधारू गौवंश की हुई मृत्यु पर प्रति गाय 40 हजार रू. की आर्थिक सहायता देने के साथ–साथ प्रदेश में पशुचिकित्सा सुविधाओं के विस्तार एवं बेहतर पशुचिकित्सा उपलब्ध करवाने की घोषणाएं की गई। राज्य सरकार द्वारा पशुपालन के क्षेत्र में की गई नवीन घोषणाओं से निःसंदेह राजस्थान पशुपालन के क्षेत्र में और अधिक सुदृढ बनेगा। विश्व पशुचिकित्सा दिवस पर सभी पशुचिकित्सकों, पशुपालकों व अन्य सभी को पुनः शुभकामनाएं व बधाई।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

वेटरनरी विश्वविद्यालय में षष्ठम् दीक्षांत समारोह का आयोजन

461 उपाधियों और 21 पदकों से किया विद्यार्थियों को अलंकृत

राजस्थान देश में सर्वाधिक पशुचिकित्सक बनाने वाला प्रदेश बनेगा : राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज जी मिश्र ने पशुपालकों की उन्नति और उनकी आय में वृद्धि के लिए योजनाबद्ध ढंग से कार्य किए जाने की आवश्यकता जताई है। उन्होंने पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अतंर्गत इस तरह के पाठ्यक्रम विकसित किए जाने पर जोर दिया जिससे पशुधन संरक्षण के साथ ही इनके उत्पादों के पोषण में भी गुणात्मक वृद्धि हो। राज्यपाल श्री मिश्र जी बीकानेर के राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राजभवन से ऑनलाइन सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पशु–धन संरक्षण से जुड़े परम्परागत मूल्यों का आधुनिकता से मेल कराते हुए इस क्षेत्र में उपचार की नवीन पद्धतियों का विकास करना होगा, तभी दवाओं व अन्य तत्वों की अधिकता से पशुधन और पशु उत्पादों पर होने वाले दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। राज्यपाल ने कहा कि वर्ष 1951 में जब भारत में दूध का उत्पादन 17 एमएमटी (मिलियन मीट्रिक टन) था, तब अमेरिका में यह 53 एमएमटी था, परन्तु श्वेतक्रांति की बदौलत वर्ष 2021 आते–आते अमेरिका के 102 एमएमटी की तुलना में भारत में दुग्ध उत्पादन 220 एमएमटी तक पहुंच गया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2003–2004 में अटल बिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में भी दुग्ध प्रसंस्करण क्षेत्र के उदारीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास हुए थे। आज भी देशभर में सहकारिता के क्षेत्र में पशुपालकों को इसका निरंतर लाभ मिल रहा है। उन्होंने कहा कि छोटे दुग्ध उत्पादकों से देश में हुई इस सहकार क्रांति को और आगे बढ़ाने की जरूरत है। राज्यपाल श्री मिश्र ने कहा कि राज्य के एकमात्र पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय के रूप में इस विश्वविद्यालय ने अपनी अलग पहचान बनाई है। उन्होंने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय को पशुधन संरक्षण के साथ ही उत्पादकता वृद्धि के आधुनिक तरीकों, पशु उत्पादों के प्रसंस्करण, विपणन आदि के क्षेत्र में भी नवीन पाठ्यक्रम शुरू करने चाहिए। उन्होंने कहा कि पशु विज्ञान केन्द्रों के माध्यम से किसान व पशुपालकों तक नवीनतम उन्नत वैज्ञानिक तकनीकों की सरल व सहज जानकारी हस्तांतरित की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान पुरुषों के वर्चस्व का क्षेत्र माना जाता रहा है, किन्तु आज यहां 65 फीसदी पदक छात्राओं को मिलना एक शुभ संकेत है। दीक्षांत अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) प्रो. एम.एल. मदन ने कहा कि भारत की कृषि पशुधन आधरित है। देश में मानव जनसंख्या के मुकाबले पशुधन की संख्या आधी है, जबकि राजस्थान में पशुधन की संख्या जनसंख्या की तुलना में दोगुनी है। उन्होंने इस स्थिति का लाभ उठाने के लिए पशुपालकों को अधिकाधिक सुविधाएं दिए जाने का सुझाव दिया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के उपमहानिदेशक (पशु विज्ञान) डॉ. बी.एन. त्रिपाठी ने कहा कि पशु चिकित्सा विज्ञान से जुड़े विशेषज्ञों और विद्यार्थियों को पशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में सामने आ रही नई चुनौतियों के लिए तैयार रहने की जरूरत है। कुलपति प्रो. सतीश कुमार गर्ग ने विश्वविद्यालय का प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए विद्यार्थियों की अकादमिक एवं सह–शैक्षणिक उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय में देशी गोवंश की नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, कांकरेज तथा मालवी के विकास के लिए निरंतर शोध कार्य किया जा रहा है । दीक्षान्त समारोह के अवसर पर सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले 21 विद्यार्थियों को पदक एवं 331 विद्यार्थियों को स्नातक, 96 को स्नातकोत्तर एवं 34 विद्यार्थियों को पीएचडी की उपाधियां प्रदान की गई। प्रो. एम.एल. मदन को इस अवसर पर विश्वविद्यालय की ओर से डॉक्टर ऑफ साइन्स की मानद उपाधि प्रदान की गई। राज्यपाल ने समारोह के आरम्भ में भारतीय संविधान की प्रस्तावना और मूल कर्तव्यों का वाचन किया।

राज्यपाल के प्रमुख सचिव सुबीर कुमार एवं विशेषाधिकारी श्री गोविन्द जयसवाल ने भी माननीय राज्यपाल के साथ समारोह में ऑनलाइन रूप से शिरकत की। समारोह में विश्वविद्यालय के प्रबंध मण्डल के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत, डॉ. अमित नैन, श्रीमती कृष्णा सोंलकी एवं अकादमिक परिषद् सदस्यगण प्रो. संजय कुमार शर्मा, बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अम्बरिश एस. विद्यार्थी, एस.के.आर.यू. के कुलपति प्रो. अरूण कुमार, एम.जी.एस.यू के कुलपति प्रो. विनोद कुमार सिंह, कुलसचिव बिन्दु खत्री, वित्तनियंत्रक बी.एल. सर्वा, आई.सी.ए.आर. संस्थानों के निदेशक व वैज्ञानिकगण, विश्वविद्यालय के डीन, डायरेक्टर, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र–छात्राएं और अतिथि अधिक संख्या में उपस्थित रहें।

फील्ड पशुचिकित्सकों का पांच दिवसीय प्रशिक्षण
वन हेल्थ मिशन में पशुचिकित्सकों की विशेष भूमिका : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं पशुपालन विभाग, राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में फील्ड पशुचिकित्सकों के लिए पशुओं में रोग निदान एवं नियंत्रण विषय पर आयोजित पांच दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का 13–17 मार्च को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण के समापन अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान को कम करने और इस क्षेत्र से किसानों व पशुपालकों को बेहतर आर्थिक रिटर्न सुनिश्चित करने के साथ–साथ वैश्विक स्वास्थ्य, आर्थिक विकास, खाद्य सुरक्षा, खाद्य गुणवत्ता और गरीबी में कमी के लिए पशु स्वास्थ्य भी एक महत्वपूर्ण कड़ी है इसलिए, राज्य में पशु रोगों की रोकथाम और उपचार में शामिल पशुचिकित्सको के ज्ञान में नियमित रूप से अद्यतनीकरण आवश्यक है ताकि वे मानव और पशु स्वास्थ्य के लिए नई चुनौतियों का सामना कर सकें। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि भारत सरकार की एस्केड परियोजना के अन्तर्गत पशुपालन विभाग के अजमेर, कोटा व जयपुर जिलों के 20 पशुचिकित्सको ने भाग लिया। कुलपति प्रो. गर्ग द्वारा इस अवसर पर प्रशिक्षण मेन्यूल का विमोचन भी किया गया। प्रशिक्षण के समन्वयक डॉ. मनोहर लाल सैन व डॉ. दीपिका धूड़िया रहे।

आत्मा योजनांतर्गत पशुपालकों का उन्नत पशुपालन व गोबर–गौमूत्र प्रसंस्करण विषयों पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय एवं कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण (आत्मा), कृषि विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत गोपालन एवं गोबर–गोमूत्र प्रसंस्करण" विषय पर दो दिवसीय प्रशिक्षण दिनांक 1–2, 9–10 एवं 25–26 मार्च को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में बीकानेर ब्लॉक के गाढ़वाला व नोखा के पशुपालक शामिल हुए। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि परम्परागत पशुपालन को आधुनिक ढंग से व्यवसाय के रूप में अपनाने की जरूरत है। पशुपालन में विभिन्न पशुधन इकाईयों को अपनाने से पशुपालक अपनी आमदनी बढ़ा सकता है। डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण के आयोजन में सहयोग किया। प्रशिक्षण में डॉ. दीपिका धूड़िया, डॉ. रजनी अरोड़ा, डॉ. राजेश नेहरा, डॉ. अशोक कुमार, डॉ. मनोहर सैन एवं दिनेश आचार्य द्वारा जैविक खेती, पशु आहार प्रबन्धन, डेयरी पशुओं में मुख्य बीमारियां एवं रोकथाम, पशुआवास प्रबन्धन, पशुओं में प्रजनन संबन्धित रोग एवं उपचार, वर्मी कम्पोस्ट, गौमूत्र का कीटनाशक के रूप में प्रसंस्करण आदि विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए गये।

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट प्रबन्धन एवं निस्तारण पर प्रशिक्षण
पशु आत्पादों में दवा अवशेष एवं प्रतिजैविक प्रतिरोधकता एक विकट समस्या : कुलपति प्रो. गर्ग

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र, राजुवास, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के विभिन्न विभागों में अध्ययनरत स्नातकोत्तर एवं विद्या वाचस्पति के 32 विद्यार्थियों को पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण 18 मार्च को प्रदान किया गया। प्रशिक्षण समापन पर सम्बोधित करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि वर्तमान समय में पशु उत्पादों में दवा अवशेष एवं प्रतिजैविक प्रतिरोधकता एक विकट समस्या है जो कि ना केवल मानव स्वाथ्य पर हानिकारक प्रभाव डालता है बल्कि वातावरण को भी दूषित करता है। हमें एकल स्वास्थ्य मिशन को ध्यान में रखते हुए जैविक पशु उत्पादों के उचित निष्पादन को बहुत अच्छे से करना चाहिए ताकि संक्रामक बीमारियों को फैलने से रोक सके। प्रो. आर.के. धूड़िया कार्यवाहक निदेशक अनुसंधान ने पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केंद्र के उद्देश्यों की विस्तृत जानकारी प्रदान की। पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट निस्तारण तकनीकी केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. दीपिका धूडिया ने बताया कि विद्यार्थियों को जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट का निस्तारण पूरी जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए तथा दूसरो को भी इसके बारे में जागरूक करना चाहिए। प्रशिक्षण में प्रो. प्रवीण बिश्नोई, डॉ. दीपिका धूड़िया व डॉ. मनोहर सेन ने व्याख्यान दिये तथा डॉ. देवेन्द्र चौधरी, डॉ. रेखा लोहिया व डॉ. चाँदनी जावा ने प्रायोगिक प्रशिक्षण प्रदान किये।

बाड़मेर के श्री मल्लिनाथ कृषि एवं पशुपालन मेले में विश्वविद्यालय प्रदर्शनी

बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा मे श्री मल्लिनाथ कृषि एवं पशुपालन मेले में दिनांक 21–22 मार्च को निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़–II) द्वारा प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर के निर्देशन में डॉ. विक्रमजीत, विषय विशेषज्ञ एवं श्री अक्षय घिंटाला, टीचिंग एसोसिएट प्रदर्शनी आयोजन में समन्वयक की भूमिका निभाई। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन कि वैज्ञानिक तौर–तरीको को माडॅल, चार्टस, पैनल्स, रगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, मिनरल्स मिक्चर, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। इस मेले में श्री पुरूषोतम रूपाला, केन्द्रीय पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्यपालन मन्त्री, भारत सरकार व श्री कैलाश चौधरी, केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री, भारत सरकार भी सम्मिलित हुए।

किसान मेला-2023 में विश्वविद्यालय प्रदर्शनी का आयोजन

स्वामी केशवांनद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा दिनांक 27–29 तक आयोजित किसान मेला– 2023 में निदेशालय प्रसार शिक्षा, राजुवास द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस प्रदर्शनी में पशुचिकित्सा की आधुनिक तकनीक व नवाचारों तथा पशुपालन कि वैज्ञानिक तौर–तरीको को माडॅल, चार्टस, पैनल्स, रंगीन चित्रों द्वारा प्रदर्शित किया गया साथ ही पशुपोषण की उन्नत तकनीकों जैसे संतुलित पशु आहार बनाना, मिनरल्स मिक्चर, अजोला उत्पादन, यूरिया मोलासेस मिनरल ब्लॉक बनाने की विधि व मॉडल का सजीव प्रदर्शन भी किया गया। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी का विभिन्न जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों द्वारा अवलोकन कर सराहना की गई। इस अवसर पर प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास भी मौजूद रहें। प्रदर्शनी के समन्वयक सहायक प्राध्यापक डॉ. अशोक कुमार थे।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला में बकरी पालन पर प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत जैविक पशुधन उत्पाद तकनीक केन्द्र, राजुवास, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में "उन्नत बकरी पालन एवं प्रबंधन" विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्राम गाढ़वाला में 15 मार्च को आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में 20 पशुपालक शामिल हुए। प्रशिक्षण के दौरान बकरी पालन का आर्थिक महत्व, प्रमुख रोग एवं उपचार, बकरियों का आवास प्रबंधन, टीकाकरण, कृमिनाशन, उननत पोषण एवं प्रमुख नस्लों पर विषय विशेषज्ञ डॉ. नीरज शर्मा एवं डॉ. रविरमन ने किसानों को व्याख्यान दिये तथा जैविक पशुपालन व जैविक बकरीपालन के नये आयाम से अवगत करवाया। समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने प्रशिक्षण कार्यक्रम का संचालन किया।

गाढ़वाला में गोपालन हेतु प्रदर्शन इकाइयों का वितरण
गोपालन ग्रामीण आर्थिक उन्नति का आधार : कुलपति प्रो. गर्ग

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढ़वाला में कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन अभिकरण, कृषि विभाग, बीकानेर सहयोग से प्रदर्शन इकाई वितरण कार्यक्रम का आयोजन 25 मार्च को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने पशुपालकों को संबोधित करते हुए कहा कि वैज्ञानिक पशुपालन तकनीकों को अपनाकर तथा मूल्यसंवर्द्धन द्वारा पशुपालक अधिक से अधिक लाभ कमा सकता है। कुलपति ने कहा कि वैज्ञानिक तकनीकों को सीखे, अपनाएं व दूसरों को भी प्रेरित करें। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस कार्यक्रम में 40 पशुपालकों को वैज्ञानिक विधि द्वारा गोपालन हेतु प्रर्दशन इकाइयों (फीड मेंजर और पशु चटाई) तथा 6 पशुपालकों को वर्मी कम्पोस्ट बेड का वितरण किया। ममता कुमारी, उपपरियोजना निदेशक, आत्मा ने कृषि एवं पशुपालन में हो रहे नवाचारों के बारे में बताया तथा आत्मा के उद्देश्यों एवं गतिविधियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने किया।

एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने गाढ़वाला में निकाली नशामुक्ति रैली

वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा विशेष शिविर के अन्तर्गत 29 मार्च को विश्वविद्यालय के यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पॉसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए गांव गाढवाला में नशा मुक्ति रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारंभ कार्यक्रम अधिकारी डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने हरी झंड़ी दिखाकर किया। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. शर्मा ने स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि नशे की समस्या आज शहर से लेकर गांव तक अपनी जडे जमा रही इससे समाज का कोई भी वर्ग अछूता नही है अतः इस समस्या का उन्मूलन आवश्यक है। नशा मुक्ति को जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना चाहिए। इसके साथ ही राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों को नशा मुक्ति का संकल्प भी दिलाया।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 16, एवं 27 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय तथा दिनांक 14–15, 17–18, 21–22, 24–25 एवं 28–29 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत आयोजित दो दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 186 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 8, 18, 22 एवं 25 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर दिनांक 10 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय तथा 14–15 एवं 27–28 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 289 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 2 एवं 13 मार्च को आनॅलाईन आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 94 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 10, 27, 28 एवं 29 मार्च को गांव सिरोरी, थैरावर, मेहरावर एवं सबोरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 72 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 8 मार्च को गांव नागोरियन ढाणी में तथा दिनांक 14, 17 एवं 27 मार्चं को आनॅलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 88 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 2, 3, 15 एवं 16 मार्च को गांव खैमरी, सैमरा, कनासिल एवं खरगपुर गांवों में तथा दिनांक 14 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों में कुल 147 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 10 एवं 14 मार्च को ऑनलाइन तथा 25 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर एवं 3–4, 17–18 एवं 28–29 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 179 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 3, 4, 8, 9, 10, 13 एवं 14 मार्च को गांव घघटाना, देवली, चैनपुरा, माता चौकी, पारलिया, मुण्डला तथा चण्डिदा में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 190 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 28 फरवरी–01 मार्च, 9–10, 17–18 एवं 27–28 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों एवं दिनांक 20 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 9, 13, 17, 18, 21, 24 एवं 27 मार्च को एक दिवसीय ऑनलाइन तथा दिनांक 20, 22, 25 एवं 28 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 255 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 8, 9, 10, 18 एवं 20 मार्च को देवडा, हुसैनपुरा, तेजपुरा फिरवासी, तिलोटी, एवं इन्द्रपुरा गांवों में तथा दिनांक 25 एवं 26 मार्च को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय एवं दिनांक 13–17 मार्च आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 153 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 23–24 एवं 25–26 मार्च को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर में दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 60 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 8, 16, 18, 25, 27 एवं 29 मार्च को गांव कालवाड़, आसलपुर, अगरपुरा, ढाणी नागान, प्रतापपुरा एवं बंसीपुरा गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 18 मार्च को ही ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 129 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 14, 16 एवं 17 मार्च को गांव चन्दूर, दोरदा, अम्बातेरी गांवो में तथा दिनांक 18 मार्च को आनॅलाईन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 89 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा दिनांक 4, 13, 20 एवं 29 मार्च को गांव थालड़का, खेतावाली, पूरबसर एवं भगवान गांवो में एक दिवसीय तथा दिनांक 9–15 मार्च को केन्द्र परिसर में कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 111 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रेल, 2023

पशु रोग	पशु	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
लंगडा बुखार	गाय, भैंस	जयपुर	हनुमानगढ़	–	भरतपुर, गंगानगर, झालावाड़
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अलवर, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जयपुर, जैसलमेर, जोधपुर
खुरपका मुहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	अलवर, जयपुर, गंगानगर	जोधपुर	–	अजमेर, बाड़मेर, भरतपुर, बीकानेर, चूरू, दौसा, हनुमानगढ़, करौली, नागौर, सीकर
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	–	जयपुर	–	अजमेर, बारां, बाड़मेर, भीलवाड़ा, दौसा, धौलपुर, डूंगरपुर, गंगानगर, झालावाड़, पाली, सीकर
पी.पी.आर.	बकरी	बारां	–	जैसलमेर	अजमेर, अलवर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भरतपुर, भीलवाड़ा, चूरू, दौसा, धौलपुर, जयपुर, झुंझुनू, नागौर, राजसमन्द, सीकर
स्वाइन फीवर	सूकर	झालावाड़	–	–	–
थीलेरिओसिस	गाय	–	–	–	बॉसवाड़ा
मरेक्स डिजीज	मुर्गी	–	–	–	बीकानेर

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. ए.पी. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं डॉ. जे.पी. कछावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183, टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

पशुपालन व जैविक खेती से धर्मवीर खीचड़ को मिली नई पहचान

वर्तमान में पशुपालन व खेती समय की जरूरत है, क्योंकि खेती के साथ पशुपालन करके ही किसान अपनी आय को दोगुना कर सकता है। इसका उदाहरण बने हैं झुंझुनू के गांव देलसर खुर्द के धर्मवीर खीचड़, जिन्होंने नवीन तकनीक और वैज्ञानिक प्रबंधन करके एक सफल पशुपालक बने और अपनी एक नई पहचान बनाई। धर्मवीर खीचड़ पहले जरूरत के अनुसार ही पशुपालन करते थे बाद में परिवार के बढ़ते खर्चों को देखते हुए पशु विज्ञान केंद्र झुंझुनू के वैज्ञानिकों से संपर्क किया। धर्मवीर खीचड़ ने निरंतर पशु विज्ञान केंद्र से विभिन्न विषयों जैसे पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन, पशुओं में कर्मी नाशक दवाओं का महत्व, टीकाकरण का महत्व, वैज्ञानिक डेयरी पालन, पशुओं में संतुलित आहार, अजोला घास तकनीक, जैविक खेती आदि पर प्रशिक्षण प्राप्त किए। धर्मवीर ने इन सभी प्रशिक्षणों में भाग लेकर अपने पशुपालन व्यवसाय को बढ़ाने की सोची। धर्मवीर ने वैज्ञानिक प्रबंधन से पशुपालन के साथ–साथ जैविक खेती भी शुरू कर दी। वर्तमान में धर्मवीर के पास 40 बीघा सिंचित कृषि भूमि है। पशुओं में धर्मवीर के पास 27 गायें है जिसमें 10 देशी गोवंश व 17 क्रॉस ब्रीड गायें हैं । इनके पास 3 मुर्रा नस्ल की भैंस भी है। धर्मवीर इन पशुओं से लगभग 150–170 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त करते हैं। धर्मवीर खीचड़ दूध बेचने के अलावा 5 बीघा में ऑर्गेनिक मौसमी व 4 बीघा में बेर व नींबू का बगीचा लगा रखा है साथ ही ऑर्गेनिक सब्जी व गेहूं उत्पादन करते हैं साथ ही तेल की कच्ची घानी लगा रखी है जिससे तेल की बिक्री करके बची हुई खल पशुओं को खिलाने के काम लेते हैं। धर्मवीर ने पशु विज्ञान केंद्र झुंझुनू के संपर्क में आकर गोबर गैस, वर्मी कंपोस्ट, व गोमूत्र अर्क, जीवामृत एवं घन जीवामृत खाद बनाने का प्रशिक्षण लेकर घर पर वर्मी कंपोस्ट खाद तैयार करते हैं एवं गोमूत्र से जीवामृत व घन जीवामृत खाद बनाकर अन्य खाद की निर्भरता को कम किया व अपने खेत में उपयोग करने के बाद शेष बची हुई खाद की बिक्री भी करते हैं। धर्मवीर ने घर पर गोबर गैस संयंत्र भी लगा रखा है जिससे घरेलू रसोई एवं डेयरी का सारा ईंधन गोबर गैस से ही काम में लेते हैं जिससे ईंधन की बचत होती है जो कि एक मिसाल के रूप में पहचान बनाई है। वर्तमान में धर्मवीर लगभग 1–1.5 लाख रुपय प्रति माह आय प्राप्त कर रहे हैं। धर्मवीर खीचड़ अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मेहनत व अपने परिवार और पशु विज्ञान केंद्र, झुंझुनू के वैज्ञानिकों को देते हैं।

संपर्क– धर्मवीर खीचड़, गांव देलसर खुर्द, तहसील नवलगढ़ (झुंझुनू) (मो.9351401845)

दुधारू पशुओं में झरमरी पौधे की विषाक्तता: दुष्प्रभाव और उपचार

परिचयः झरमरी (लैन्टाना कामरा) एक बहुवर्षीय, झाड़ीनुमा जहरीला पादप है जो मूलतः विदेशों से सजावटी पौधे के रूप में भारत लाया गया था। यह दुनिया भर में सबसे अधिक ज्ञात हानिकारक खरपतवारों में से एक है। झरमरी को पंचफूल–बूटी, घनेरी, बाराफूंला आदि नामों से भी जाना जाता है। फूल के रंग के आधार पर लाल, गुलाबी, पीला, सफेद, गुलाबी–लाल और नांरगी किस्में होती हैं। लाल फूलों वाली किस्मों को सबसे अधिक जहरीला माना जाता है लेकिन कुछ सफेद और गुलाबी फूलों वाली किस्में भी अत्यधिक जहरीली हो सकती हैं। फूलों का रंग पादप की उम्र, परागण की अवस्था एवं वातावरणीय भिन्नता पर निर्भर करता है। फलों का रंग पकने से पूर्व हरा, जबकि पकने के बाद नीला–बैंगनी हो जाता है।

दुधारू पशु सामान्यत झरमरी की तीखी गंध और स्वाद के कारण झरमरी के सेवन से बचते हैं। झरमरी की विषाक्तता मुख्य रूप से तब होती है जब छोटे और नए पशुओं को झरमरी की अधिकता वाले क्षेत्रों में चरने दिया जाता है और जब जानवर अपने शरीर के वजन का एक प्रतिशत या उससे अधिक झरमरी का सेवन करता है। झरमरी की पत्तियां और अपरिपक फल पशुओं के लिए अधिक विषैले होते हैं। गाय, भैंस, भेड़, बकरी, घोड़ा, ऊंट, कुत्ता, गिनी–पिग, खरगोश, शुतुरमुर्ग और चूहे में इस पादप के खाने से विषाक्तता हो जाती है जिससे कई बार पशु की मृत्यु भी हो जाती है। जुगाली करने वालों में गाय, भैंस और भेड़ अत्यधिक अतिसंवेदनशील होते हैं, जबकि बकरियां कम प्रतिरोधी होती है।

विषाक्तता के लक्षणः पशुओं में झरमरी विषाक्तता का कारण लैंटाडीन (मुख्यतः टाइप–ए) की उपस्थिति है। ये विषाक्त पदार्थ सम्पूर्ण आहारनाल (मुख्यतः छोटी आंत) में अवशोषित होते हैं। ये विषाक्त पदार्थ पशुओं में यकृत विषाक्तता, फोटोसेंसिटाइजेशन और पीलिया का कारण बनते हैं। झरमरी के सेवन के बाद फोटोसेंसिटाइजेशन की शुरूआत अक्सर 1 से 2 दिनों में होती है। सूर्य के प्रकाश में पशुओं को बेचैनी होती है। झरमरी विषाक्तता में सामान्यतः भूख की कमी, शरीर में कमजोरी, कब्ज, लेकिन कभी–कभी कब्ज के बाद दस्त भी हो जाते हैं। त्वचा पर मुख्यतः खुजली, बालों का झड़ना, सूजन, फफोले होना, घाव होना, चमड़ी का उतरना आदि लक्षण प्रमुखता से पाये जाते हैं। इस तरह के लक्षण प्रमुख रूप से बाल रहित एवं हल्के रंग की त्वचा जैसे कान, चेहरा आदि पर पाये जाते हैं। कभी–कभी पशुओं में अंधापन भी हो जाता है।

उपचारः झरमरी विषाक्तता के लिए कोई विशेष दवा (एंटीडॉट) नहीं है। झरमरी विषाक्तता के प्रभाव को कम करने के लिए पशु को एक्टिवेटेड चारकोल (5–10 ग्राम) पिलाना चाहिए। दस्तावर के लिए बोविलैक्स पाउडर एवं तरल पैराफिन पिलाना चाहिए। बीमार पशुओं को लिवर–टॉनिक पिलाएं। त्वचा पर एंटीसेप्टिक क्रीम लगाएं। घावों को भरने के लिए रोजाना दो बार पोटेशियम परमैगनेंट घोल (कीटाणुनाशक) और हर्बल मरहम लगाएं। बीमार पशु को बाहर चराने ना भेजे, बाड़े में ही खानपान करवाएं। पर्याप्त ताजा पानी और अच्छा चारा उपलब्ध कराएं। बीमारी के दौरान पशुओं को हरा चारा नहीं दें। बीमार पशु को सीधे धूप से बचाने के लिए हमेशा छाया युक्त या अंधेरे कमरे में रखें, ताकि फोटोसेंसिटाइजेशन से बचा जा सके। ज्यादा विषाक्तता होने पर निकटतम पशुचिकित्सक से संपर्क करें। बीमार पशु के शरीर से मक्खी–मच्छरों को भगाने के लिए कीटरोधी दवा का स्प्रे करें।

रोकथाम एवं प्रबंधनः पशुओं को झरमरी बहुतायत वाले क्षेत्रों में चराने ना भेजें। बीमार पशुओं को दोपहर के समय ना चरायें, अत्यावश्यक हो तो सुबह एवं सांयकाल के समय ही चराने जाएं। बीमार पशुओं को अन्य पशुओं से अलग रखें। झरमरी, पशुओं को बीमार करने के अलावा कृषि योग्य भूमि को भी खराब करता है, इसलिए किसानों एवं पशुपालकों को इसके प्रति जागरूक करना चाहिए।

झरमरी की निम्न विधियों से रोकथाम की जा सकती है।

1. **यांत्रिक विधि :** आग लगाना, काटना, उखाड़ना आदि।
2. **रासायनिक विधि :** रासायनिक खरपतवारनाशक के उपयोग से भी इसके फैलाव को रोका जा सकता है। जैसे–गैमेक्सोन आदि।
3. **जैविक विधि :** कुछ पादन एवं जीव (जैसे–प्लम–मोथ, बीज–मक्खी आदि) झरमरी को नष्ट करने में सहायक होते हैं। जैविक विधि लम्बे समय के लिए प्रभाव होती है।

डॉ.सुमन मीणा, डॉ. नीरज कुमार शर्मा, डॉ. विकास कुमार मीणा
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

पशुओं में ''ट्रिप्नोसोमियसिस'' कारण व निवारण

ट्रिप्नोसोमियसिस रोग पशुओं में लगभग पूरे विश्व में फैला हुआ है। इस रोग का प्रकोप होने पर पशुओं की उत्पादक क्षमता में कमी व कमजोरी हो जाती है, जिससे पशुपालकों को काफी आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। ट्रिप्नोसोमियसिस रोग को सर्रा या तिबरसा के नाम से भी जाना जाता है। सर्रा सभी प्रकार के पशुओं जैसे की गाय, भैंस, घोड़ों व ऊंटों में पाया जाता है। यह एक रक्त परजीवी (प्रोटोजोआ) जनित रोग है। यह परजीवी पालतु पशुओं के अलावा जंगली पशुओं को भी प्रभावित करते हैं। गाय में इसका प्रकोप भैंस की अपेक्षा कम होता है परन्तु श्वान, घोड़े व ऊंट में यह रोग मुख्यतः गंभीर लक्षण लेकर आता है। सर्रा रोग मुख्यतः एक प्रकार की मक्खियां जिसे की टेबेनस फलाई के नाम से जाना जाता है के द्वारा पशुओं में फैलाया जाता है। टेबेनस मक्खी ट्रिपेनोसोमा परजीवी को संक्रमित पशु से अपने मुंह में ले लेती है और फिर दूसरे पशुओं पर बैठने व काटने से यह परजीवी उनके रक्त में प्रवेश कर जाते हैं।

लक्षण :–

ऊंट में यह रोग एक्यूट व क्रोनिक दो तरह की अवस्था में पाया जाता है। क्रोनिक अवस्था में संक्रमण तीन वर्ष तक रहता है इसलिए सर्रा को तीबरसा भी कहते हैं। ऊंटों में शुरूआती लक्षणों में पशु को बुखार आता है तथा शरीर दुर्बल हो जाता है। रक्त की कमी हो जाती है। एडीमा हो जाता है व ग्याभीन मादा में गर्भपात भी हो सकता है और इलाज न होने पर ऊंट की मृत्यु हो जाती है।

घोड़े में रूक–रूक कर बुखार आता है, पैरों में एडीमा हो जाता है। दुर्बलता आ जाती है व उचित समय पर इलाज न मिलने पर संक्रमित घोड़ों की मृत्यु भी हो सकती है। श्वानों में संक्रमण के कारण गले में सूजन आ जाती है और एडिमा हो जाता है और कई बार आंख से दिखाई देना भी कम हो जाता है। गाय की अपेक्षा भैंसों में इसके लक्षण अधिकतर दिखाई देते हैं जिससे संक्रमित भैंस में बार–बार बुखार आता है व सिर को दीवार से टकराती है। खाना–पीना कम कर देती है। आँख, मुंह, नाक से पानी गिरने लगता है और खून की कमी हो जाती है और ग्याभिन पशु में गर्भपात की पूरी सम्भावना रहती है।

निदान :–

लक्षणों के आधार पर तथा रक्त की जांच के द्वारा इस रोग का निदान किया जा सकता है। इसके लिए पशु के कान की नस से बुखार होने पर रक्त का नमूना लेकर माइक्रोस्कोप से देखने पर यह परजीवी दिखाई देते हैं।

उपचार :–

इस रोग के उपचार के लिए क्यूनापायरामीन सल्फेट तथा क्यूनापायरामीन क्लोराइड नामक औषधियां पशुचिकित्सक की देख रेख में देनी चाहिए। इसके अलावा डेक्सट्रोज सैलाइन पशुओं में ग्लूकोज की कमी हो तो प्रयोग करना काफी लाभदायक होता है। परन्तु ये सभी उपचार पशुचिकित्सक की निगरानी में होने चाहिए।

बचाव :–

इस रोग के संक्रमण को कम करने के लिए टेबेनस मक्खियों को नियंत्रित करना चाहिए इसके लिए पशुशाला के अन्दर व आस–पास कीटनाशकों का समय–समय पर छिड़काव करें। रोग के संक्रमण को पशु आवास के आस–पास पूरी तरह साफ सफाई रख कर काफी हद तक कम किया जा सकता है। पशुशाला में नियमित चूने का छिड़काव करने से भी मक्खियां कम होती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

बदलते मौसम में पशुओं की उचित देखभाल आवश्यक

ग्रामीण क्षेत्रों में पशुपालन सामाजिक एवं आर्थिक बदलाव का महत्वपूर्ण अंग है। पशुपालन प्राचीन काल से ही हमारे जीवन का अभिन्न अंग है। अभी मौसम बदल रहा है, कभी गर्मी, कभी सर्दी व कभी–कभी बे–मौसम बरसात हो रही है। इस बदलते मौसम में मनुष्य ही नहीं पशु–पक्षी भी बीमारी की चपेट में आ रहे हैं। पशुओं के चारे, पानी और भोजन का प्रबंध, पशुओं के लिए बाड़े का प्रबंध, उनके स्वास्थ्य और प्रजनन की देखभाल पशुपालन का हिस्सा है। बदलते मौसम के कारण पशुओं की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है, जिससे छोट पशुओं में हाइपोथर्मिया, निमोनिया और डायरिया जैसे रोग हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में पशुओं की उचित देखभाल बहुत आवश्यक है। सर्दी का असर कम होने तथा गर्मी का प्रकोप बढ़ने पर पशुओं में संक्रमण का खतरा बढ़ जाता है, क्योंकि इस समय मच्छर, मक्खी, चिंचड़, कीट–पतंगे आदि बहुत तेजी से पनपते है, जिससे एनाप्लाज्मोसिस, थाइलेरियोसिस व बवेसियोसिस आदि रोग फैलने की संभावना रहती है। अतः इन परिस्थितियों में पशुओं के आहार, प्रबंधन पर विशेष ध्यान देना चाहिए। पशुओं को संतुलित आहार व लवण मिश्रित दाना देना चाहिए। पशुओं को हरा चारा देवें, लेकिन इस बात का विशेष ध्यान रहे कि सिर्फ हरा चारा खिलाने से पशुओं में आफरा व अपच की समस्या हो सकती है। अतः हरे चारे के साथ–साथ सुखा चारा भी खिलावें तथा सप्ताह में दो बार गुड़ भी खिलावें। साथ ही चारे का पाचन अच्छी मात्रा में होने के लिए मीठा सोड़ा पशु आहार में नियमित रूप से इस्तेमाल किया जाना चाहिए। पशुओं को साफ तथा स्वच्छ पानी पिलाना चाहिए साथ ही छोटे पशुओं को खीस पिलावें, जिससे पशु की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़े। पशुओं को समय–समय पर कृमिनाशक दवा देवें। बाह्य परजीवियों के बचाव हेतु पानी में दवा मिलाकर नहलाना चाहिए। नमी व सीलन से पशुओं को दूर रखें। बिछावन में पुआल का प्रयोग करना चाहिए तथा समय–समय पर बिछावन को बदलते रहें, साथ ही पशुओं का समय पर टीकाकरण करवाना चाहिए। पशुशाला की साफ–सफाई का भी पूरा ध्यान रखें। ऐसे उपायों पर अमल करने से पशु को बदलते मौसम से बचाकर उसकी उत्पादन क्षमता को भी बरकरार रखा जा सकेगा। अतः पशुपालक भाइयों को बदलते मौसम में पशुओं की उचित देखभाल करनी चाहिए जिससे पशुओं की उत्पादन क्षमता पर विपरित प्रभाव न पड़ें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

''धीणे री बात्यां''
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया